ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 30 कुल पृष्ठ-8 15 से 21 जुलाई, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 आ.शु.-06

सरल स्वभाव, मिलनसार, वैदिक विद्वान व कर्मठ व्यक्तित्व के धनी

आचार्य भवभूति जी का सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य ने आचार्य भवभूति जी को श्रद्धांजलि देते हुए परिवार को आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक लाख रुपये देकर आर्थिक सहयोग किया

सैकड़ों व्यक्तियों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से अर्पित की श्रद्धांजलि

जीवन में सदैव आशावादी, सद्चरित्र, अर्थशुचिता में सर्वश्रेष्ठ, सौम्य, विनम्र, सेवाभावी, तपस्वी आचार्य भवभूति जी का 27 जून, 2021 को रात्रि में सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। इस दुर्घटना में उनकी पत्नी और बच्चे भी गम्भीर रूप से घायल हो गये। जिनका उपचार चल रहा है। दिल्ली के पहाड़गंज गुरुकुल के पूर्व संचालक एवं वर्तमान में तेलंगाना में बटुक विकास केन्द्र गुरुकुल आलियाबाद के संस्थापक के रूप में आचार्य भवभूति जी कार्यरत थे। आप एक अत्यन्त सज्जन देव पुरुष थे, उनकी तीन सन्तानें हैं। अपने अधिकार क्षेत्र में उन्होंने अपने निज पुत्रों तथा बटुक के बालकों में किसी भी प्रकार का कोई भेद भाव कभी नहीं किया। वे गुरुकुल के बालकों के उत्थान के लिए कठिन परिश्रम कर रहे थे। जीवन में सदैव आशावादी, विनम्र, सेवाभावी, तपस्वी आचार्य भवभूति जी के निधन से आर्य समाज तथा विशेषकर गुरुकुल को महती क्षति पहुँची है।

आचार्य भवभूति जी का अन्तिम संस्कार 29 जून, 2021 को सायंकाल आर्य जगत के गणमान्य आचार्यगण, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के पदाधिकारीगण, गुजरात से पधारी हुई आचार्या शीतल जी, तेलंगाना प्रान्त की आचार्याओं, कार्यकर्ताओं, परिवार के सदस्यों तथा गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आर्ष कन्या गुरुकुल, आर्ष शोध संस्थान आलियाबाद, तेलंगाना में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्य जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अत्यन्त द्रवित हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, गुरुकुलों और भारतीय संस्कृति के पुनरूद्धार पर बल दिया। प्रोफसर साहब ने कहा कि आचार्य भवभूति जी के आकस्मिक निधन से आर्य समाज तथा विशेषकर गुरुकुलों की बहुत बड़ी क्षति हुई है। वे अत्यन्त निष्ठावान एवं समर्पित होकर गुरुकुल का संचालन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही भारत का भविष्य उज्जवल हो सकता है। उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को जीवन निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बताया और कहा कि आज पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण के मामले में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को लागू करके हम नई पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव से बचा सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि अपने गुरुकुलों को आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण करें तथा उसमें उत्तम शिक्षा की व्यवस्था करें। हमारे ब्रह्मचारी न केवल संस्कृत शिक्षा में पारंगत हों अपितु आधुनिक तकनीक में भी पारंगत होने चाहिए। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में प्राचीन शिक्षा के साथ–साथ अर्वाचीन विद्याओं का भी पढ़ना अति आवश्यक है। उन्होंने गुरुकुलों को सशक्त बनाने, आचार्यों को हर प्रकार की सुख–सुविधा प्रदान करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्राचीन संस्कृति लुप्त प्राय हो रही है। अतः गुरुकुलों को आत्म निर्भर बनाना अत्यन्त आवश्यक है। जिसमें मानव के स्थाई विकास की योजना बनाई जाती है। उन्होंने आर्यजनों से अपील की कि गुरुकुलों को आर्थिक सहायता भेजकर आचार्यों का मनोबल ऊँचा करें। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना की ओर से आचार्य जी के परिवार की सहायतार्थ एक लाख रुपये सहायता प्रदान की और अपील की आचार्य जी के परिवार की सहायता के लिए आप सबलोग अपना योगदान प्रदान करें। प्रो. विट्ठलराव जी की अपील पर आचार्य जी के परिजनों को लगभग आठ लाख रुपये की सहायता प्राप्त हो चुकी है। प्रो. विट्ठलराव जी के गुरुकुलों के सम्बन्ध में उद्गारों को सुनकर तथा अविलम्ब सहायता राशि प्रेषित करने से उनकी गुरुकुलों के प्रति निष्ठा तथा सम्मान का परिचय मिलता है।

आचार्य भवभूति जी के आकस्मिक निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य भवभूति जी का निधन गुरुकुलों के साथ–साथ आर्य जगत की महती क्षति है। वे अत्यन्त मिलनसार, जुझारू, कर्मठ और निष्ठावान व्यक्तित्व के धनी थे। गुरुकुल को उनसे बहुत अधिक आशाएँ थी। लेकिन दैवयोग से वे हमारे बीच से चले गये। परमपिता परमात्मा से हम दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ऋषि दयानन्द की अनुपम देन

– आचार्य सोमदेव शास्त्री

दृश्यते अनेन अस्मिन् इति वा दर्शनम्। जिससे पदार्थों या जिन ग्रन्थों के द्वारा यथार्थ ज्ञान होता है उन्हें दर्शन कहते हैं। सृष्टि रचयिता कौन है, इसकी रचना क्यों की गई है इत्यादि विषयों का विवेचन जिन ग्रन्थों में किया गया है। उन्हें दर्शनशास्त्र कहते हैं। वेदों में सभी विषयों का विवेचन बीज रूप/संक्षेप में किया गया है। (सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु.–2.7) इनमें एक–एक विषय की विस्तृत व्याख्या एक–एक दर्शन शास्त्र में की गई है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (10.129) में आये हुए सत–असत का विवेचन सांख्य दर्शन में किया गया है। सृष्टि के सबसे सूक्ष्म अंश को परमाणु कहा जाता है जिसका विभाजन नहीं हो सकता। उसका ज्ञान किस प्रकार हो यह प्रमाणों के द्वारा ज्ञात होता है। इसका न्याय दर्शन में तथा एक परमाणु दूसरे परमाणु से क्यों भिन्न (पृथक) है। यह महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में वर्णन किया है। प्रकृति और पुरुष (जड़ और चेतन) की चर्चा सांख्य दर्शन में है तो चेतन (पुरुष) आत्मा–परमात्मा को कैसे प्राप्त करें यह प्रक्रिया योग दर्शन में बताई है। चेतन (पुरुष विशेष) अर्थात् ब्रह्म का स्वरूप क्या है, यह वेदान्त दर्शन में तथा यज्ञ/यज्ञादि कर्मकाण्ड का विवेचन मीमांसक दर्शन में किया है। पृथक–पृथक विषयों का विवेचन करते हुए अपनी मान्यता की प्रामाणिकता के लिए वेदों के प्रमाणों का उल्लेख करते हैं। इसलिए सभी छः दर्शन आस्तिक दर्शन कहलाते हैं। जैन, बौद्ध और चार्वाक दर्शन वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते। इसलिए इन्हें नास्तिक दर्शन कहा जाता है। (नास्तिको वेद निन्दकः) वेदान्त दर्शन (ब्रह्म सूत्र) की व्याख्या करते हुए किसी ने अद्वैतवाद तो किसी ने द्वैतवाद तो किसी ने मिशिष्टा द्वैतवाद की मान्यता को सिद्ध करने का प्रयास किया तथा परस्पर एक–दूसरे की विचारधारा का खण्डन अपनी व्याख्या में किया हैं जिससे जन–सामान्य में भ्रम फैला कि वेदान्त दर्शन में परस्पर विरोधी विचारधारा है। महर्षि दयानन्द जी ने कहा कि वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र) के मूल सूत्रों में परस्पर कोई विरोध नहीं है। मूल सूत्रकार (वेदान्त दर्शन रचयिता) तो प्रथम सूत्र में स्पष्ट लिख रहा है कि 'अथा तो ब्रह्म जिज्ञासा' अर्थात् ब्रह्म और ब्रह्म को जानने वाला वे दो हैं तथा अगले सूत्र में 'जन्माद्यस्य यतः' अर्थात् जिस ब्रह्म को जानना चाहते हो वह सृष्टि की उत्पत्ति, पालन प्रलय करता है। अर्थात् ब्रह्म, जीव और प्रकृति (जिससे सृष्टि बनती है) ये तीन तत्त्व हैं, न तो अद्वैत है, न द्वैत है, न विशिष्टाद्वैत है अपितु त्रैत (ईश्वर, जीव, प्रकृति) है। जिसे त्रैतवाद कहा जाता है। जो वेद मन्त्र द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया ..... में स्पष्ट बतलाया है। वेद मन्त्र के अनुसार ही वेदान्त दर्शन के मूल सूत्रों में वर्णन किया है।

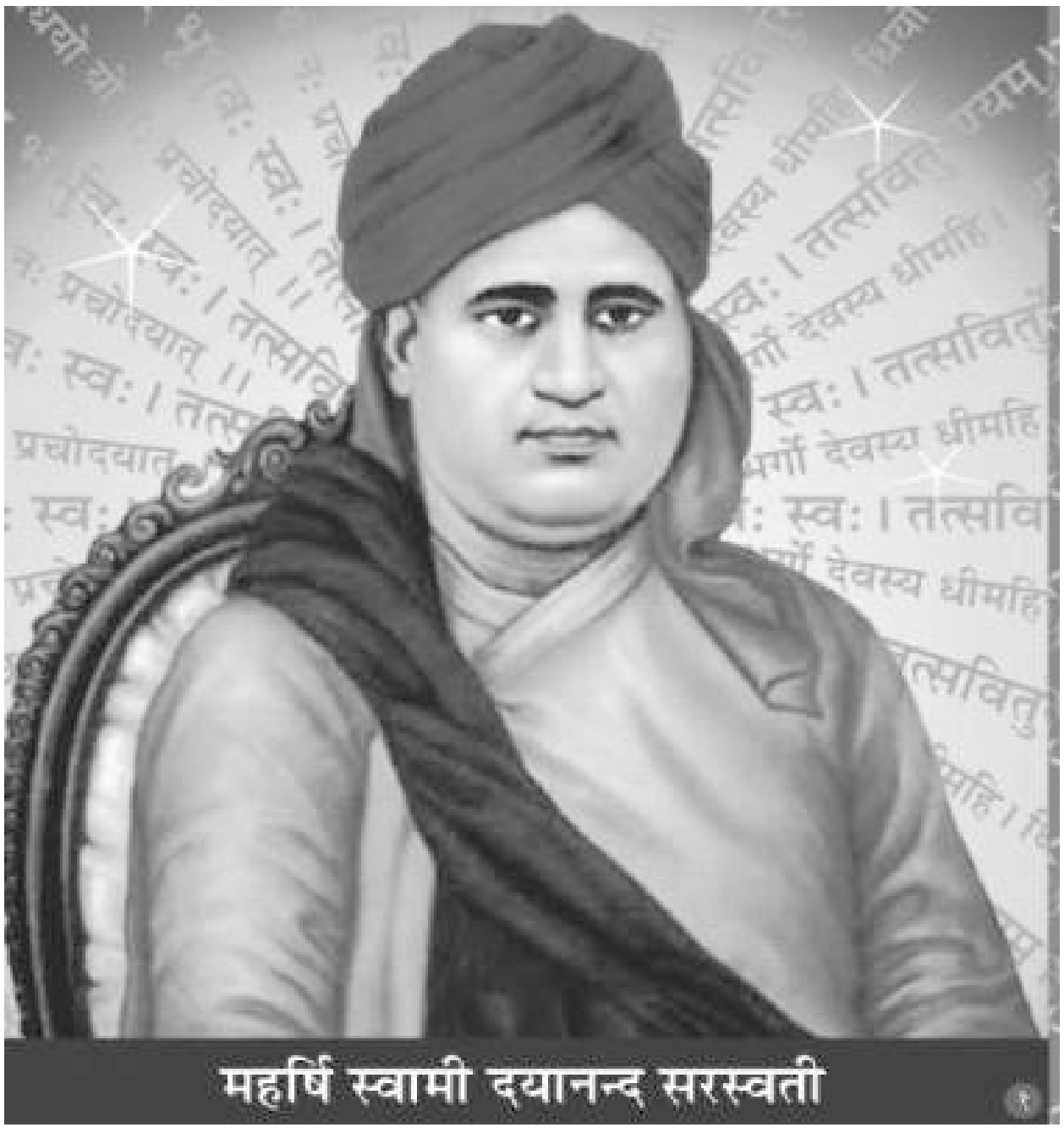

विविध विरुद्ध विचारधारा व्याख्याकारों ने वेद मत दर्शन के ऊपर डाल दिया जो उनकी अपनी मान्यता थी दर्शन की नहीं। यह दयानन्द जी ने स्पष्ट किया।

इसी प्रकार छः दर्शनों में भी परस्पर विरोध नहीं है। किसी ने प्रमाण तो किसी ने प्रमेय तो किसी ने प्रकृति–पुरुष तो किसी ने पुरुष प्राप्ति के उपाय तो किसी ने ब्रह्म तथा किसी ने कर्मकाण्ड का विवेचन किया है। जिससे हजारों वर्षों से यह भ्रांति प्रतीत हो गई कि आस्तिक दर्शनों में परस्पर विरोध है। इस भ्रांति का निराकरण करते हुए ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट किया है कि षड्दर्शनों में परस्पर कोई विरोध नहीं है। जैसे एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक–दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न छः अवयवों का छः शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं है। भारतीय दर्शन में महर्षि दयानन्द की यह अद्भुत देन है जिसे नकारा नहीं जा सकता।

अनेक वर्षों से ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि नामों को लेकर ईश्वर अनेक है और परस्पर एक–दूसरे की निन्दा कर रहे थे, ऋषि दयानन्द ने याद दिलाया कि परमात्मा एक है और उसके नाम अनेक हैं। एकं तद् विप्रा बहुधा वदन्ति। (स्त्री शूद्रो न धीयेताम्) समाज में स्त्री और शूद्र को शिक्षा से वंचित किया जा रहा था। 'यथेमाम् वाचम् कल्याणीम्' वेद मन्त्र देकर ऋषि ने कहा कि वेद पढ़ने का अधिकार सभी को है। यज्ञो में पशु हिंसा का जघन्य कृत्य हो रहा था। (पशुन–पाहि) वेद मन्त्र का प्रमाण देकर स्पष्ट किया कि यज्ञ में पशु हिंसा नहीं होती। समाज में ऊँच–नीच, छूआछूत तथा तथाकथित जन्मनाजाति प्रथा का घोर विरोधकर समाज को नई दिशा दी। ब्रिटिशकाल में जो विदेशियों की प्रशंसा और चाटुकारिता में लगकर भारत और यहाँ के ऋषि–मुनियों के प्रति जो लोग हीन भावना पैदा कर रहे थे उसे दूर करते हुए ऋषि ने इस देश (भारत) को पारसमणि लिखा और स्पष्ट किया कि विश्व में सारी विद्या भारत से ही गई। यह 'एतत्देश प्रशुतस्य...' का प्रमाण भी दिया। स्वराज्य का सर्वप्रथम उद्घोष करके स्वाधीनता की प्रेरणा दी। वेदों में अश्लीलता, पशु हिंसा आदि त्रुटियाँ मध्यकालीन वेद भाष्यकारों की उनको दिखलाते हुए वेदों की यर्थात् व्याख्या अपने वेदभाष्य में करके वेद महिमा को उजागर किया। 19वीं सती के सामाजिक दार्शनिक, आध्यात्मिक, धार्मिक क्षेत्रों में महर्षि दयानन्द जी का अनुपम योगदान है। जिन्होंने देशभक्तों, सामाजिक सुधारकों को यथार्थ दिशा प्रदान की। मानव समाज सदा ऋषि दयानन्द का ऋणी रहेगा।

नये संकल्पों एवं उत्साहवर्द्धक योजनाओं के साथ मनायें श्रावणी पर्व – स्वामी आर्यवेश

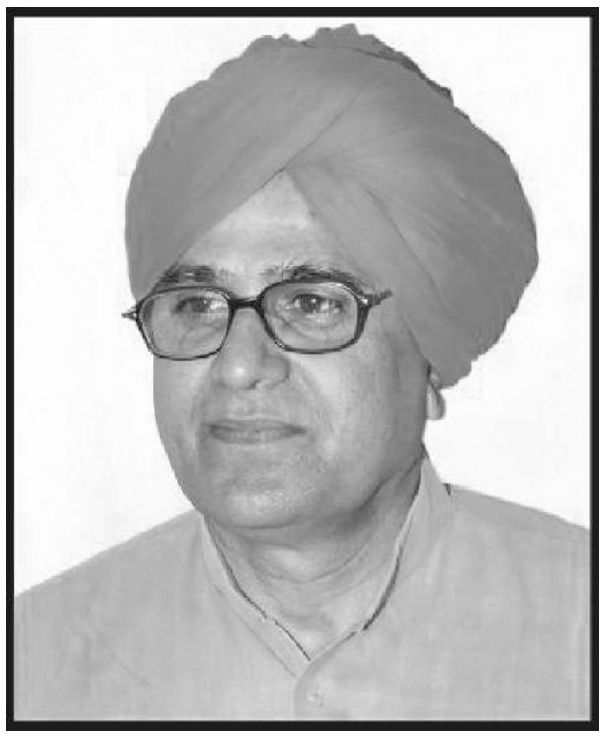

(श्रावणी पर्व को आर्यजन अत्यन्त उत्साह के साथ मनाते हैं। लेकिन इस वर्ष कोरोना संक्रमण के इस वातावरण में अपनी सुरक्षा तथा औरों की सुरक्षा एवं सरकार द्वारा निर्देशित नियमों को ध्यान में रखते हुए इस पर्व को मनायें। श्रावणी पर्व आर्य समाज का मुख्य पर्व है, इसको धूमधाम से मनाने की आवश्यकता है जिससे आर्यों में उत्साह का जागरण हो सके।)

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्व रखते हैं। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र का निर्माण होता है तथा वेदों का जीवनदर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है। इस वर्ष 22 अगस्त, 2021 रविवार को श्रावणी पर्व तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 30 अगस्त, 2021 सोमवार को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम लोगों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा ज्ञान गंगा घर-घर पहुंचा सकते हैं।

श्रावणी पर्व के अवसर पर रक्षाबन्धन का त्यौहार भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है जिसमें प्रत्येक भाई अपनी बहनों की रक्षा का संकल्प लेता है। इसी प्रकार यज्ञोपवीत धारण करते समय भी संकल्प लिये जाते हैं। देखा जाये तो श्रावणी पर्व संकल्पों को धारण करने का पर्व है। इस बार का श्रावणी पर्व हम कुछ विशेष संकल्प लेकर मनायें। हम अपनी वैदिक संस्कृति को बचाने, सुरक्षित रखने, आगे बढ़ाने के लिए निम्नलिखित तीन संकल्प लेकर इस पर्व को उत्साहपूर्ण ढंग से मनायें।

1. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का संवर्द्धन करते हुए गुरुकुलों को सशक्त एवं सबल बनाना तथा सुन्दर व्यवस्था के साथ सुव्यवस्थित एवं आकर्षक बनाने में योगदान देना।

2. संस्कृत भाषा को कम से कम 10वीं कक्षा तक अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करवाने का प्रयास करना।

3. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वेदभाष्य को समस्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करवाने का प्रयास करना।

इस बार के श्रावणी पर्व को जहाँ हम पारम्परिक ढंग से उत्साह पूर्वक मनायें वहीं उपर्युक्त संकल्पों को पूर्ण करवाने के लिए दृढ़ संकल्पित हों और पूरी निष्ठा के साथ इस कार्य को पूर्ण करने के लिए संगठित होकर अग्रसर हों। इसके लिए यह आवश्यक है कि गुरुकुलों के सभी स्नातक, योगी, हित चिन्तक एवं आचार्यगण श्रावणी के अवसर पर अपने-अपने क्षेत्र के गुरुकुलों या प्रमुख आर्य समाजों में एकत्रित होकर उपरोक्त महत्त्वपूर्ण संकल्प सामूहिक रूप से लें और उसे क्रियान्वित करने के लिए ठोस योजना बनायें।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर, वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके समालोचना अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिए जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के ऊपर सभी आर्य समाजों में गम्भीर चर्चा होनी चाहिए और इस पर कार्य योजना भी बनानी चाहिए। अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त जो वंचित, शोषित जन हमसे दूर हुए और अलग-थलग पड़े लोग हैं उनको साथ मिलाने की आज बहुत आवश्यकता है। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन उन बस्तियों में भी जाकर यज्ञ करें तथा सहभोज का आयोजन करें जहाँ इस प्रकार के लोग निवास करते हैं। जात-पात उन्मूलन की आवश्यकता सबसे अधिक है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही हमें चलना चाहिए। वंचित, शोषित व उपेक्षित वर्ग को जोड़ना इस श्रावणी पर्व पर विशेष अभियान की तरह चलाया जाना चाहिए। उपेक्षित वर्ग को आर्य समाज में आमंत्रित करके तथा उनका सम्मान करके भी हम जात-पात पर निर्णायक प्रहार कर सकते हैं। इस कार्य से देश में हो रहे धर्मान्तरण के कुचक्र को भी रोकने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि धर्मान्तरण की अधिकतम कार्यवाही समाज के इन वंचित और उपेक्षित वर्गों के भाई-बहनों पर ही की जाती है।

एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है कि ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं। हमें अपने कार्यों से चरित्र से, व्यवहार से, अपने पास-पड़ोस के लोगों पर विशेष छाप छोड़नी चाहिए और इसके लिए अपने पास-पड़ोस और गली-मुहल्ले के लोगों के घरों में दुःख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा। उनकी सहायता करनी होगी। उनके पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर यथाशक्ति सहयोग प्रदान करना चाहिए। लोगों से मेल-मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे और जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम उन तक अपनी बात पहुँचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का ब्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आरोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सद्मन्तव्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान भी किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

30 अगस्त, 2021 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा योगीराज श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे योगीराज श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

इस श्रावणी पर्व पर हम सब आर्यों को संकल्प लेना चाहिए कि ईमानदारी व कर्मठता से हम आर्य समाज का कार्य करेंगे तथा सक्रिय होकर आगे आयेंगे एवं नये जोश के साथ जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ करेंगे।

आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र ''वैदिक सार्वदेशिक'' के स्वयं ग्राहक बनें तथा अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाने का प्रयास करें। ''वैदिक सार्वदेशिक'' का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा आजीवन शुल्क 2500/- रुपये मात्र है। अपने आर्य समाजों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना चित्र सहित प्रकाशित करने के लिए अवश्य भेजें जिससे आर्य जगत की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो तथा अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो सके।

आर्य समाज हापुड़ के सत्संग भवन के सुसज्जित पुनर्निर्माण के लोकार्पण का कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य धमार्थ होम्योपैथिक औषधालय का भी किया गया उद्घाटन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की कार्यक्रम की अध्यक्षता

संसद सदस्य डॉ. सत्यपाल सिंह जी रहे मुख्य अतिथि तथा युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता

दिनांक 27 जून, 2021 को आर्य समाज हापुड़ में प्रातः 8 से 10.30 बजे तक विशाल सत्संग भवन के सुसज्जित पुनर्निर्माण का भव्य लोकार्पण कार्यक्रम समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर धमार्थ होम्योपैथिक औषधालय का भी शुभारम्भ किया गया। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मुख्य अतिथि के रूप में बागपत से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी, युवा संन्यासी मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र अग्रवाल जी सांसद, श्री विजयपाल जी आढ़ती विधायक हापुड़ सदर सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने कहा कि भारतीय धर्म और संस्कृति का विशाल भवन वेदों की नींव पर खड़ा है। आचार्य मनु के विचार से नास्तिक वह नहीं है जो ईश्वर को नहीं मानता बल्कि नास्तिक वह है जो वेद को नहीं मानता। उन्होंने 'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योर्तिगमय।' 'मृत्यों मा अमृतम् गमय' की व्याख्या करते हुए कहा कि हमें असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृतत्व की ओर बढ़ने का हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए। हमारे वेदों में इस प्रकार की भावना से ओत–प्रोत अनेकों मन्त्र हैं। उन्होंने कहा कि एक मात्र वेद ही ऐसे ग्रन्थ हैं जिसमें उपदेश किसी एक देश अथवा समूह के लिए नहीं अपितु संसार के प्रत्येक स्थान पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से आत्मोन्नति, सामाजिक उत्थान, शांति–सद्भाव, सदाचार, लौकिक सुख तथा पारलौकिक आनन्द का मार्ग प्रशस्त करते हैं। राग–द्वेष, अहंकार, स्वार्थ, संघर्ष, शोषण तथा विभिन्न प्रकार के समस्याओं से त्रस्त विध्वंस के कगार पर खड़ी मानवता की रक्षा के लिए वैदिक शिक्षा तथा वेदानुकूल आचरण ही एकमात्र उपाय है।

क्रांतिकारी युवा संन्यासी एवं मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में कहा कि आर्य समाज की स्थापना मानव मात्र का उपकार करने के लिए की गई थी तथा बिना किसी भेदभाव एवं संकीर्णता के महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना निश्चित किया था। अतः यह बात भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि आर्य समाज संसार के समस्त प्राणियों के उपकार की भावना से कार्य करता है। उन्होंने कहा वैदिक सिद्धान्तों का पालन करने से ही सभी लोग सुखी हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज देश में सप्तक्रांति के मुद्दों को लेकर आन्दोलित होने की आवश्यकता है। जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशामुक्ति, भ्रष्टाचार, धार्मिक अन्धविश्वास एवं महिला उत्पीड़न तथा पाखण्ड मुक्त समाज बनाने के लिए हम सबको विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवारों में दैनिक यज्ञ करें और अपने बच्चों को और युवाओं को घर पर ही ऐसे संस्कार दें जिससे वे समाज को उन्नत करने की दिशा में आगे बढ़ सकें। स्वामी आदित्यवेश जी ने आर्यजनों का आह्वान किया कि आर्य समाज के समर्पित एवं कर्मठ कार्यकर्ता, आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने के लिए आगे आयें, ताकि आम जनता आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप से आर्य समाज की ओर आकृष्ट होकर आगे बढ़ें। स्वामी आदित्यवेश जी ने क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेने का भी आह्वान किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज हापुड़ एक ऐसी आर्य समाज है जिसके उदाहरण लोगों को अन्य समाजों के सामने प्रस्तुत करने चाहिए। यहाँ के पदाधिकारी अत्यन्त निष्ठावान एवं कर्मठ हैं। पूरे वर्ष कुछ न कुछ कार्यक्रम इस आर्य समाज में कराते रहना इनकी विशेष पहचान है। आर्य समाज के विशाल सत्संग हाल का नवीनीकरण तथा सुसज्जीकरण करके यह विशाल आयोजन जो किया जा रहा है, यह अत्यन्त सराहनीय कार्य है। मैं आर्य समाज हापुड़ निर्माण समिति के संयोजक श्री आनन्द प्रकाश आर्य जी, प्रधान श्री नरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्री सुरेश सिंघल जी आदि को मैं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि इसी प्रकार निष्ठा, ईमानदारी और परिश्रम से ये पूरी टीम आर्य समाज के कार्य को जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास करती रहेगी। गत् वर्ष महर्षि दयानन्द दीर्घा का निर्माण आर्य समाज हापुड़ में किया गया जो कि देश में उदयपुर के बाद केवल हापुड़ में ही सम्भव हो सका है जो अत्यन्त प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य था। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों को जन–जन तक पहुँचाने में आर्य समाज हापुड़ विशेष प्रयास कर रहा है। आज आवश्यकता इस बात की भी है कि दिग्भ्रमित युवाओं को सही दिशा प्रदान की जाये। उनमें देशभक्ति, अपनी संस्कृति के प्रति लगाव, मातृ–पितृ भक्ति, ईमानदारी आदि गुण समाहित करने के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। क्योंकि युवा ही किसी देश की रीढ़ होते हैं। आर्य समाज हापुड़ इस सम्बन्ध में विशेष प्रयास करेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

इस अवसर पर धमार्थ होम्यापैथिक औषधालय का भी उद्घाटन किया गया। इस औषधालय में निःशुल्क औषधि वितरण किया जायेगा। इस अवसर पर आर्य समाज के कई वयोवृद्ध सदस्यों एवं सहयोगियों को स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की सफलता में मुख्यरूप से आर्य समाज के युवा मंत्री श्री अनुपम आर्य एवं उनके अन्य सभी सहयोगी पदाधिकारियों का विशेष योगदान रहा तथा स्त्री आर्य समाज की पूरी टीम ने समारोह की व्यवस्था एवं भोजन आदि के प्रबन्ध को कुशलता के साथ संभाला। आर्य समाज के संरक्षक श्री आनन्द प्रकाश आर्य ने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

युवा क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी की प्रेरणा तथा निर्देशन में नजफगढ़ क्षेत्र के 36 गाँव में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया

भारतीय संस्कृति यज्ञीय संस्कृति है, यज्ञ टोना-टोटका नहीं बल्कि एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है

– स्वामी आदित्यवेश

युवा क्रांतिकारी संन्यासी एवं मिशन आर्यावर्त के निर्देशक स्वामी आदित्यवेश जी के निर्देशन में आर्य समाज नजफगढ़ द्वारा क्षेत्र के 36 गाँव एवं 86 कॉलोनीयों में ट्रैक्टर ट्राली के माध्यम से यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञों का यह कार्यक्रम लगभग एक महीने तक चला। इस दौरान यज्ञ से होने वाले लाभ, पर्यावरण सुरक्षा एवं निरोगता के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करके विद्वानों ने जनता को जागरूक किया। इस विशेष यज्ञ का समापन बाबा हरिदास मंदिर झाड़ौदा कलां में कन्या गुरुकुल लोवां कलां की आचार्या डॉ. राजन मान सहित सैंकड़ो आर्यजनों की उपस्थित में हुआ। इस वातावरण शुद्धि महायज्ञ के संयोजक व कर्मठ आर्य कार्यकर्ता जिले सिंह आर्य ने सभी सहयोगियों का आभार प्रकट किया तथा भविष्य में भी सहयोग की अपील की।

नजफगढ़ में यज्ञ यात्रा का शुभारंभ करते हुए आर्य युवा संन्यासी व आर्य समाज कोरोना रिलीफ अभियान भारत के संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने यज्ञ की वैज्ञानिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति यज्ञों की संस्कृति है। उन्होंने कहा कि यज्ञ में आहुत किये जाने वाले सभी पदार्थों को अग्नि सूक्ष्म बना देती है और ये सूक्ष्म तत्त्व वायु में मिलकर प्राणी मात्र को लाभान्वित करते हैं क्योंकि चारों तरफ के वायुमण्डल से ही प्रत्येक प्राणी श्वास लेता है और श्वास के द्वारा यज्ञ में डाली गई सामग्री और घी के सूक्ष्म तत्त्व शरीर के अन्दर जाते हैं और विषाणुओं तथा कीटाणुओं को नष्ट करते हैं। उन्होंने कहा कि यज्ञ किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं है अपितु मानवमात्र के लिए उपयोगी है।

स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि रोहतक जिले में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली में स्वामी दयानंद ऑक्सीजन बैंक 24 घण्टे समाज के लिए निःशुल्क ऑक्सीजन कन्संट्रेटर उपलब्ध करवा रहा है।

इस विशेष यज्ञ के ब्रह्मा पद को युवा योगाचार्य योगेंद्र योगी जी ने सुशोभित किया। पूरे कार्यक्रम का संयोजन श्री जिले सिंह आर्य जी ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। इस यज्ञ में जिन कर्मठ कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा उनमें श्री आजाद आर्य, श्री राज सिंह आर्य, श्री तेजपाल यादव, श्री जय भगवान, श्री भगवत स्वरूप खलीफा के भतीजे श्री अजीत पायलट, श्री भूपेन्द्र यादव सुपुत्र श्री अमरपाल प्रधान, श्री त्रिभूवन यादव, श्री मीणा तरूण यादव (निगम पार्षद), श्री अन्तिम सूरज गहलोत (निगम पार्षद), श्री ओम प्रकाश सहरावत प्रधान, श्री राजेश आर्य, डॉ. मंगतराम, श्री दिलीप बाबू जी, श्री सुरेन्द्र टेंट हाऊस (खैरा), श्री जयकिशन आर्य, श्री धर्म सिंह आर्य इंसपेक्टर, श्री सुरेन्द्र जाखड़, श्री कैप्टन बलमत, श्री वेद प्रकाश प्रधान, श्री मदन आर्य, श्री भानू आर्य, डॉ. कृष्ण आर्य, आर्य समाज खैरा से श्री लछी प्रधान, श्री बिल्लू पहलवान, श्री बनवारी लाल यादव, स्वामी ब्रह्मानंद, स्वामी कृष्णानंद, रोहित कुंडू, उत्तम योगी, सुमन्यु यादव आदि ने विभिन्न स्थानों पर यज्ञ के कार्य को पूर्ण करवाया। उन्होंने लोगों को निरन्तर घरों में यज्ञ करने की प्रेरणा व संकल्प भी दिलवाया।

यह विशेष यज्ञ नजफगढ़ से शुरू होकर 36 गाँव तथा 86 कालोनियों में आयोजित किया गया। मुख्य नाम इस प्रकार हैं – खरखड़ी नाहार, खरखड़ी जटमल, खेड़ा डावर, पंडकाना कलां, पंडकाना खुर्द, दौलतपुर, असालतपुर, हसनपुर, कागन हेड़ी, नानक हेड़ी, झूलझूली, रावता, दौराला, गाजिनपुर, सारंगपुर, दरियापुर, घुमनहेड़ा, खैरा, काजीपुर, पपरावट, मलिकपुर, उसवा, समलपुर, जाफरपुर, सुरेडा, मित्राऊ, ठांसा, इसापुर, रावता मोड़ कालोनी, केर गांव, मुंढाला कलां, मुठाला खुर्द, बाकर गढ़ आदि हैं। इस यज्ञ से जहाँ पूरे क्षेत्र का वातावरण शुद्ध हुआ वहीं आम जनता में यज्ञों के प्रति आस्था उत्पन्न हुई तथा उन्हें इसके वैज्ञानिक महत्त्व के बारे में भी ज्ञान प्राप्त हुआ। गाँव के गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी आदित्यवेश जी से आग्रह किया कि इस प्रकार के आयोजन वे भविष्य में भी कराते रहें।

यज्ञ अभियान के दौरान यज्ञ के आचार्य योगेन्द्र योगी ने लोगों को नशा छोड़ने तथा जीवन में निरन्तर यज्ञ करने के संकल्प दिलवाये और लोगों को विशेष प्रेरणा दी। आचार्य योगेन्द्र योगी जी का पूरा समय यज्ञ को समर्पित रहा और उन्होंने समर्पित भाव से इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराया। विदित हो कि नजफगढ़ क्षेत्र में स्व. श्री राव रघुनाथ सिंह आर्य ने आर्य समाज का सघन कार्य किया हुआ है। उसी के फलस्वरूप इस पूरे क्षेत्र में आर्य समाज का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। शीघ्र ही क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचार की ठोस योजना चलाई जायेगी।

आजमाएँ तो जीवन स्वर्ग बन जाए

– वैद्य राजेन्द्र साह

1. यदि आप अपने माता-पिता का आदर करेंगे तो आपके बच्चे भी आपका आदर करना सीखेंगे।

2. दूसरे मनुष्यों से जैसा व्यवहार आप अपने लिए पसन्द करते हैं वैसा ही व्यवहार यदि आप दूसरों के साथ करें तो आपका जीवन बदलकर स्वर्ग बन सकता है। सामने वाले के स्थान पर अपने को रखकर जरा सोचने की आदत डालें कि यदि ''मैं उसकी जगह होता तो क्या करता?'' तो बहुत सी विकट समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा और साथ ही अनावश्यक तनाव से मुक्ति भी मिलेगी।

3. किसी को भी बिना मांगे और अनावश्यक सलाह देने और बात-बात पर टोकने की आदत त्याग दें। इस तरीके से किसी व्यक्ति, चाहे बच्चा हो या बड़ा, में सुधार लाने की आशा करना व्यर्थ है। जीवन में सुधार लाने के लिए प्रकृति, सत्संगति, महापुरुषों का जीवन और श्रेष्ठ लेखकों की प्रेरणादायक पुस्तकें ही वास्तविक प्रेरणा स्रोत हैं।

4. जैसा मधुर व्यवहार विवाह से पहले प्रेमी-प्रेमिका के मध्य देखा जाता है, वैसा ही व्यवहार प्रेमी-प्रेमिकावत् व्यवहार, एक-दूसरे को समझने की भावना और परस्पर तालमेल का विवाह के बाद जीवन में किया जाये तो पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन वास्तव में आनन्ददायक बन सकता है। फिर भला दाम्पत्य जीवन में कटुता और क्लेश का स्थान कहाँ?

5. 'क्या खाते हैं' इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना कि खाये हुए आहार को ठीक से पचाना। अतः जो आहार आप ठीक से पचा न सकें उसका सेवन न करें और जो खाद्य पदार्थ आपको अनुकूल न आता हो, उसका सेवन त्याग देना चाहिए। इसी प्रकार क्या कमाते हैं? इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है कि आप अपनी आय को विवेक और बुद्धिमता से कितना खर्चते हैं।

6. दूसरों की बढ़ोतरी से अपना मिलान या कम्पेरिजन करके दुःखी मत होइए और न ही व्यर्थ प्रतिस्पर्धा में उतरकर होश खोइए। प्रतिस्पर्धा का कहीं अन्त नहीं है। ईर्ष्या और दूसरों को सुखी देखकर दुःखी होने का स्वभाव मानसिक तनाव और अनेकानेक रोगों का कारण बनता है, जबकि दूसरों को सुखी देखकर आनन्दित होने का मजा अपने आप में किसी स्वर्गिक सुख से कम नहीं है।

अपने जीवन रूपी 'आधी भरी, आधी खाली गिलास' के आधे खाली भाग को देखकर और अपनी उपलब्धियों को नजरअन्दाज करके व्यर्थ में दुःखी मत होइए। 'जो पास नहीं है' उसे देखकर निराश होने की बजाए 'जो पास में है' उसको देखकर आप सदा आशावादिता के साथ खुशियाँ बटोरिए। सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाइए। 'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि'।

इस सृष्टि में सभी समान नहीं हो सकते। यहाँ तक कि एक ही माँ की कोख से उत्पन्न भाई-बहन में भी प्रत्येक का अपना एक अलग व्यक्तित्व है। यह भेद जन्म-जन्मान्तर के शुभाशुभ कर्मों का प्रतिफल है। कर्मवाद सद्कर्मों की प्रेरणा देता है और सप्त-व्यसनों से बचाता है। जैसा कोई कर्म करेगा वैसा ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्मों के द्वारा इस जीवन और अगले जन्म को निखारना आपके अपने हाथ में है। महाभारत में भगवान् श्रीकृष्ण ने फल की कामना किए बिना, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है :-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'

इस मर्म को समझने के बाद बहुत से मानसिक तनावों से सहज ही मुक्ति मिल जाती है और कर्त्तव्य परायणता का पथ प्रशस्त हो जाता है।

7. 'सादा जीवन, उच्च विचार' के अपनाने से जहाँ आत्मा चमकती है वहाँ फैशनपरस्ती और कुत्सित विचारों से आत्मा मलीन होती है। हमारी संस्कृति आत्मोन्मुखी होने से आत्मा प्रधान है। यहाँ व्यक्ति के चरित्र और गुणों की पूजा होती है शरीर और शरीर पर धारण किए गए वस्त्र आभूषणों या उनके नकल (फैशन) की नहीं।

आवश्यकताओं को कम करने में ही सच्चा सुख छिपा है। चाह घटाने से चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है। किसी ने सच कहा है :-

चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए, वह है शहन्शाह।।

8. सभी धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ, पूजा-पद्धतियों का हमें सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ये सब केवल माध्यम अथवा मार्ग हैं- एकमात्र लक्ष्य परमात्मा तक पहुँचने के लिए। जिस प्रकार अनेक नदियों और जल-धाराओं के जल का एकमात्र लक्ष्य आगे जाकर अन्त में विशाल सागर में विलीन होकर उस सागर से एकाकार हो जाना है, उसी प्रकार समस्त धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ और उनसे जुड़ी पूजा-पद्धतियों के उपासक का अन्तिम लक्ष्य भी आगे जाकर अन्त में परमात्मा की प्राप्ति ही है।

'सर्वधर्मसम्मानभाव' इतनी सी बात ठीक से समझकर जीवन में आचरण में लाई जाये तो साम्प्रदायिकता का नामोनिशान न रहेगा और इंसानियत जागेगी जिससे हमारा जीवन स्वर्ग बन जायेगा।

9. किसी भी भारतीय को किसी के आगे नतमस्तक होने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारी संस्कृति महान् है, जो कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, ज्ञानी महावीर, महात्मा बुद्ध, गुरुनानक, महर्षि दयानन्द जैसे धर्मनायकों द्वारा स्थापित महान् मानवीय मूल्यों और आदर्शों पर आधारित है। यथा - 'सादा जीवन, उच्च विचार', ब्रह्मचर्य, शाकाहार, सर्वधर्मसम्मानभाव, सभी देवी-देवताओं के प्रति सम्मान, नारी के प्रति सम्मान, माता-पिता बुजुर्गों के प्रति सम्मान, सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा की भावना, क्षमा, करुणा, सत्य, अस्तेय, समन्वयवाद, कर्मवाद, संतोष, दान, शील, तप, त्याग, समर्पण, प्रेम, भाईचारा इत्यादि पर है, जो सर्वधर्म सहिष्णुता, अनेकता में एकता, सह-अस्तित्व, 'जीओ और जीने दो' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सन्देश देती है। आज विरासत में मिली मानवीय मूल्यों की ऊँचाई को छूने वाली इसी संस्कृति के कारण हमारा सिर सदैव ऊँचा रहा है और इसी से हमारा देश महान् है। भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना और उन्हें जीवन में उतारना हमारा परम धर्म है। यह लेख डॉ. अजीत मेहता जी द्वारा लिखित ''स्वदेशी चिकित्सा सार'' पर आधारित है।

ग्राम. पो.-सरैया बाजार, वाया-पारू, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)-843112

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/- में

एक वेद सैट मात्र 3100/- रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर

लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002 • दूरभाष : 011-23274771

23 जुलाई जयन्ती पर विशेष

जाज्वल्यमान नक्षत्र – चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था?काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है?युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम?'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता?मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेतों की सज़ा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।

आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम्' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के

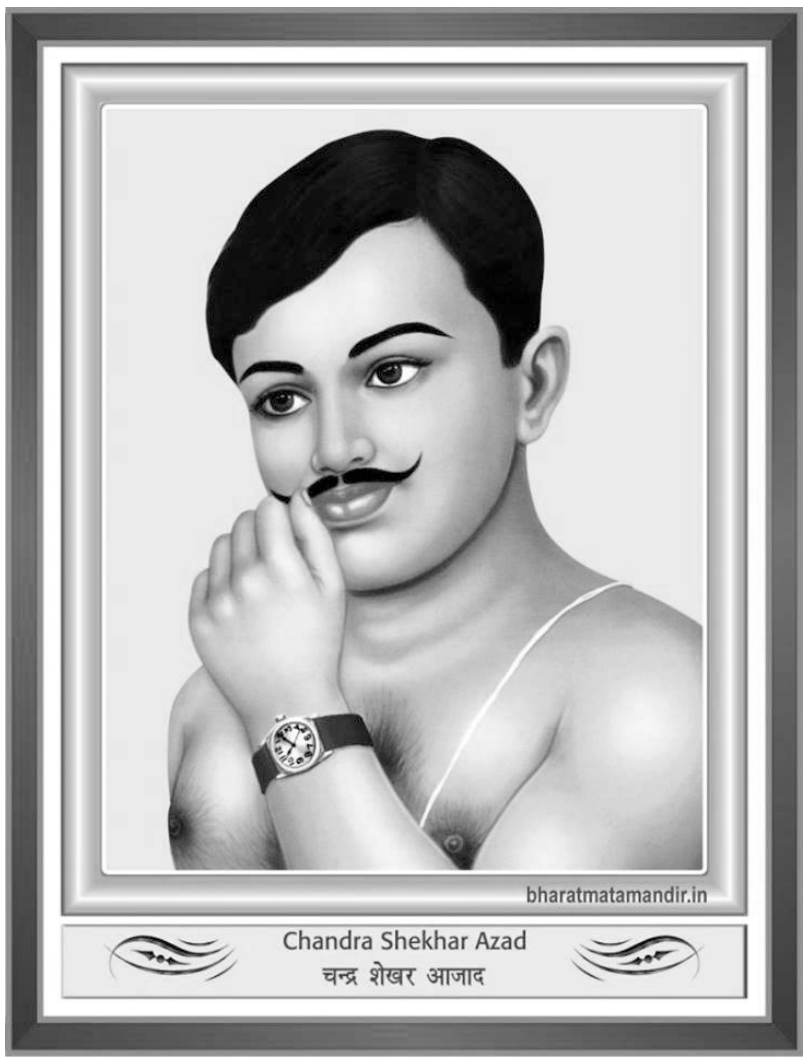

बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी की सज़ा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था ..... धांय–धांय कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

यू.जी.सी. द्वारा 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों की सूची में युग प्रवर्तक तथा महान दार्शनिक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम न होने पर पूरे आर्य जगत में भारी रोष तथा असंतोष का वातावरण व्याप्त

पूरे देश से भारी संख्या में विरोध पत्र भेजकर जताया जा रहा है रोष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के युगान्तरकारी व्यक्तित्व और कृतित्व ने देश में एक ऐसी समग्र क्रांति का अधिष्ठान किया कि उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं के कारण सभी समकालीन सुधारवादी आन्दोलनों को निस्तेज सा कर दिया था। स्वामी दयानन्द परम आस्तिक, योगात्मा, अध्यात्मवादी, महान तार्किक एवं दर्शनिक तथा मानवतावादी दिव्य आत्मा थे। उन्होंने वेदों का तल स्पर्शी आलोडन कर अपने निष्कर्ष सत्यार्थ प्रकाश में अंकित किये। उन्होंने 'संस्कारविधि' में मुख्यतः सोलह संस्कारों का प्रतिपादन कर जन–साधारण में धर्म प्रवृत्ति जगाई। श्रद्धा और विश्वास को उन्होंने तर्क एवं वेदाधिरित बताया। भक्ति को योग व अध्यात्म से जोड़ा। दान सुपात्रों को देने की व्यवस्था की। धर्मभीरूता के स्थान पर धर्म चिन्तन को प्रतिष्ठित किया। फलित ज्योतिष के स्थान पर गणित ज्योतिष को वरीयता प्रदान की। अवतारवाद के स्थान पर निराकारवाद की अवधारणा को प्रचलित किया। उन्होंने दैनिक जीवन को धार्मिक व आध्यात्मिक बनाने के लिए महामुनि पतंजलि के अष्टांग योग मार्ग का प्रतिपादन किया। पंचमहायज्ञों को अपनाने पर बल दिया। पुरुषार्थ चतुष्टय के अनुसार जीवन व्यतीत करने का आग्रह किया। स्वराज्य स्वाधीनता का समाघोष लगाकर आर्य समाज में स्वतंत्रता आन्दोलन की हर धारा में अपना योगदान दिया। ऐसे महामानव, दार्शनिक तथा समाज सुधारक का नाम यू.जी.सी. ने 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों की सूची में शामिल न करके घोर आपत्तिजनक कार्य किया है। जिससे सम्पूर्ण आर्य जगत एवं बुद्धिजीवी वर्ग में भारी रोष है।

इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अविलम्ब केन्द्रीय शिक्षामंत्री एवं यू.जी.सी. के चेयरमैंन को पत्र लिखकर माँग की कि इस गलती को तुरन्त सुधार लिया जाये और महर्षि दयानन्द जी का नाम यू.जी.सी. द्वारा अपलोड की गई दार्शनिकों की सूची में सम्मानपूर्वक अंकित किया जाये। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के माध्यम से उन्होंने जन–जन तक इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रसारित किये। परिणामस्वरूप सम्पूर्ण आर्य जगत में रोष का वातावरण व्याप्त हो गया है। देश के विभिन्न स्थानों से सम्बन्धित विभागों को विरोध पत्र भारी संख्या में लिखे जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में जो ज्ञापन और विरोध पत्र भेजे गये हैं, उनको यहां पर अंकित किया जा रहा है। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि यदि यू.जी.सी. ने अपनी गलती का सुधार नहीं किया तो आर्य समाज इस सम्बन्ध में आन्दोलन करने के लिए मजबूर होगा।

स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम पाठ्यक्रम में शामिल हो

बालोतरा(नसं)। आर्य समाज गांधीपुरा, आर्य वीर दल, बालोतरा के तत्वावधान में यूजीसी द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती की उपेक्षा यथा 19 एवं 20 शताब्दी के प्रमुख दार्शनिकों में स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम सम्मिलित नहीं किया गया जिसको लेकर लेकर प्रधानमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी बालोतरा नरेश सोनी को ज्ञापन सौंपा।

आर्य समाज गांधीपुरा के मंत्री आर्य जितेन्द्र ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने दर्शन का नया पाठ्यक्रम अपनी वेबसाईट पर कुछ समय पूर्व अपलोड किया है। इस पाठ्यक्रम की इकाई–5 (ट) में समकालीन 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड किये गये हैं उनमें स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द, महात्मा गांधी सहित 15 लोगों के नाम लिखे गये हैं जिनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम नहीं है। जबकि वे समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद भाष्य जैसी रचनाओं के द्वारा अपने उच्च दार्शनिकता एवं पाण्डित्य का परिचय दिया हुआ है। उसके बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित न करना हास्यास्पद है। वरिष्ठ आर्य वीर गोविंदराम परिहार ने कहा कि इससे आर्य समाज संगठन एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों में असंतोष एवं आक्रोश है। इस दौरान राजेंद्र गहलोत, मांगीलाल पंवार, सवाई आर्य, कोषाध्यक्ष नरेश पंवार, बाबूलाल परमार, जीवराज आर्य, दिनेश सोलंकी, महेंद सुंदेशा, नरेंद परिहार, जितेंद्र परिहार, सुरेश सैनी सहित आर्य जन उपस्थित थे।

यूजीसी नेट पाठ्यक्रम मानव संसाधन मंत्रालय और आयोग के चेयरमैन को आर्य समाज ने पत्र लिख जताया विरोध

दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानंद सरस्वती शामिल नहीं

जागरण विशेष
आशीष सिंह • धनबाद

हरहर आर्या

स्वामी आर्यवेश

"स्वामी दयानंद समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे, इसमें कोई शक नहीं है। ऐसे में समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम शामिल न किया जाना गलत है। इसके संशोधन के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्री और यूजीसी को 30 जून को ही पत्र दिया गया है।
स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस संबंध में पत्र मिला है। नेट के पाठ्यक्रम में ऐसा हुआ है। देखते हैं ऐसा कैसे हुआ। पूरी जांच करने के बाद ही किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे। गड़बड़ी हुई है तो उसे सुधारा जाएगा।
दीबा राजपूत, डिप्टी डायरेक्टर यूजीसी"

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने दर्शनशास्त्र का नेट का नया पाठ्यक्रम अपनी वेबसाइट पर कुछ समय पूर्व अपलोड किया। इस पाठ्यक्रम की इकाई-5 (ट) में 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड हुए उनमें स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, महात्मा गांधी, इकबाल सहित 15 लोगों के नाम हैं, मगर स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम नहीं है।

समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे: स्वामी दयानंद स्वामी दयानंद समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद भाष्य जैसी रचनाओं के जरिए अपनी विद्वता का परिचय दिया। बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित नहीं किया गया। आखिर क्यों, ऐसे सवाल उठ रहे हैं। इसको लेकर विरोध के स्वर उठने लगे हैं।

बिनोद बिहारी कोयलांचल विवि के दर्शनशास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष एनके अंबष्ठ के अनुसार, सूची दयानंद सरस्वती का नाम शामिल न करना समझ से परे है। यह तो न्यायोचित भी नहीं है। दयानंद सरस्वती ने उपनिषद की स्थापना की, इसमें अद्वैत एवं द्वैत दोनों दर्शन शामिल हैं। जब हिंदू धर्म का पराभव हो रहा था, तब दयानंद सरस्वती ने पुनरुत्थान किया। यूजीसी की सूची में इनका नाम जरूर शामिल करना चाहिए था।

आर्य समाज, निरसा के प्रधान सह राजार्य सभा के प्रदेश अध्यक्ष हरहर आर्या ने भी केंद्रीय शिक्षा मंत्री को पत्र लिखकर महर्षि दयानंद सरस्वती का नाम सूची में शामिल करने की मांग की है। इसकी प्रतिलिपि यूजीसी के चेयरमैन व मानव संसाधन मंत्रालय को भी भेजी गई है।

अनुयायियों में आक्रोश : हरहर आर्या समेत कई विद्वानों का कहना है कि जिन दार्शनिकों के नाम इस सूची में अपलोड हैं, इनमें से अधिकांश पर महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन का विशेष प्रभाव रहा है। सूची में नाम न शामिल करने से आर्य समाज एवं महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयायियों में आक्रोश है।

दार्शनिकों की सूची में इनके नाम: यूजीसी की ओर से जारी सूची में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, इकबाल, केसी भट्टाचार्य, राधाकृष्णन, जे कृष्णमूर्ति, महात्मा गांधी, भीमराव आंबेडकर, डीडी उपाध्याय, नारायण गुरु, तिरुवल्लुर, ज्योतिबा फुले, एमएन राव व मौलाना आजाद के नाम शामिल हैं।

दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानंद शामिल नहीं

आशीष सिंह • धनबाद

यूजीसी नेट पाठ्यक्रम
- मानव संसाधन मंत्रालय और यूजीसी चेयरमैन को आर्य समाज ने पत्र लिख किया विरोध
- स्वामी जी को समकालीन भारतीय दर्शन का शिखर पुरुष माना जाता है

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने दर्शनशास्त्र का नेट का नया पाठ्यक्रम अपनी वेबसाइट पर कुछ समय पूर्व अपलोड किया। इस पाठ्यक्रम की इकाई-5(ट) में 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड हुए उनमें उनमें स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, महात्मा गांधी, इकबाल सहित 15 लोगों के नाम हैं। मगर स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम नहीं है।

स्वामी दयानंद समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद भाष्य जैसी रचनाओं के जरिए अपनी विद्वता का परिचय दिया। बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित नहीं किया गया। आखिर क्यों, ऐसे सवाल उठ रहे हैं। इसको लेकर विरोध के स्वर उठने लगे हैं। बिनोद बिहारी कोयलांचल विवि के दर्शनशास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष एनके अंबष्ठ के अनुसार सूची दयानंद सरस्वती का नाम शामिल न करना समझ से परे है। यह तो न्यायोचित भी नहीं है। यूजीसी को सूची में इनका नाम जरूर शामिल करना चाहिए था।

आर्यसमाज निरसा धनबाद के प्रधान सह राजार्य सभा के प्रदेश अध्यक्ष हरहर आर्या ने भी केंद्रीय शिक्षा मंत्री को पत्र लिखकर महर्षि दयानंद सरस्वती का नाम सूची में शामिल करने की मांग की है। इसकी प्रतिलिपि यूजीसी के चेयरमैन व मानव संसाधन मंत्रालय को भी भेजी गई है।

आर्य सभा ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री को लिखा पत्र

निरसा. राज्य आर्य सभा के प्रदेश अध्यक्ष हरहर आर्य ने भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री एवं यूजीसी चेयरमैन धीरेंद्र सिंह को पत्र लिखकर यूजीसी द्वारा 19वीं एवं 20 वीं शताब्दी के दार्शनिकों में महर्षि दयानंद सरस्वती का नाम सम्मिलित नहीं करने पर रोष जताया है. पत्र में कहा है कि यूजीसी ने दर्शन का नया पाठ्यक्रम वेबसाइट पर अपलोड किया है. इस पाठ्यक्रम की इकाई-5 (ट) में समकालीन 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड किये गये हैं, उनमें स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, महात्मा गांधी सहित 15 लोगों के नाम हैं, लेकिन महर्षि दयानंद सरस्वती का नाम नहीं है. जबकि, वे समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे. महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद भाष्य जैसी अपनी रचनाओं से उच्च दार्शनिकता का परिचय दिया था. उसके बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित नहीं होना हास्यास्पद लगता है.

प्रभात खबर Mon, 12 July 2021 https://epaper.prabhatkhabar.com

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।